IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन में आने वाली चुनौतियों के प्रति बी. एड. तथा शिक्षा शास्त्री के छात्राध्यापकों के अभिमत का तुलनात्मक

(A comparison of the perceptions of B.Ed. and Shiksha Shastri student teachers regarding the challenges faced in implementing the National Education Policy 2020.)

Author 1 - Rekha Paliwal, Research Scholar Madhav University, AbuRoad Rajasthan

Author 2 - Dr. Naresh Kumar Paliwal, Principal, (J.N.V. University) Kanak College of Education Pali, Rajasthan

Abstract : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन में कई चुनौतियाँ हैं, जिनका सामना बी. एड. और शिक्षा शास्त्री के छात्राध्यापकों को करना पड़ सकता है। इन चुनौतियों के प्रति छात्राध्यापकों के अभिमत का तुलनात्मक अध्ययन करने से पता चलता है कि वे किन मुद्दों पर सहमत या असहमत हैं। विद्यालयों में पर्याप्त बुनियादी ढांचे की कमी एक बड़ी चुनौती है, जैसे कि कक्षाओं की कमी, पुस्तकालय और प्रयोगशालाओं की अनुपलब्धता। प्रशिक्षित और अनुभवी शिक्षकों की कमी एक अन्य बड़ी चुनौती है, जो छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में बाधा उत्पन्न करती है। भारत की भाषायी और सांस्कृतिक विविधता एक चुनौती हो सकती है, खासकर जब छात्रों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने की बात आती है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच डिजिटल विभाजन एक अन्य चुनौती है, जो छात्रों को समान अवसर प्रदान करने में बाधा उत्पन्न करती है। बी. एड. और शिक्षा शास्त्री के छात्राध्यापकों के अभिमत का तुलनात्मक अध्ययन करने से पता चलता है कि वे इन चुनौतियों के प्रति सहमत हैं और उनका मानना है कि इन चुनौतियों का सामना करने के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। अधिकांश छात्राध्यापकों का मानना है कि शिक्षकों की भूमिका छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण है, और उन्हें अपने शिक्षण कौशल में सुधार करने के लिए नियमित प्रशिक्षण और समर्थन की आवश्यकता है। छात्राध्यापकों का मानना है कि सरकारी समर्थन और नीतियों का क्रियान्वयन इन चुनौतियों का सामना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन में कई चुनौतियाँ हैं, जिनका सामना बी. एड. और शिक्षा शास्त्री के छात्राध्यापकों को करना पड़ सकता है। इन चुनौतियों के प्रति छात्राध्यापकों के अभिमत का तुलनात्मक अध्ययन करने से पता चलता है कि वे इन चुनौतियों का सामना करने के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता को समझते हैं और सरकारी समर्थन और शिक्षकों की भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हैं।

Keywords : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, बी. एड., शिक्षा शास्त्री, छात्राध्यापक, अभिमत, तुलनात्मक अध्ययन, चुनौतियाँ, क्रियान्वयन, शिक्षा प्रणाली, शिक्षक प्रशिक्षण, सरकारी समर्थन, बुनियादी ढांचे, भाषा और सांस्कृतिक विविधता, डिजिटल विभाजन।

Article : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, जिसका उद्देश्य छात्रों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना है। इस नीति के तहत, शिक्षा प्रणाली में व्यापक परिवर्तन किए गए हैं, जिनका उद्देश्य छात्रों को कौशल आधारित और डिजिटल शिक्षा प्रदान करना है। लेकिन इस नीति के क्रियान्वयन में कई चुनौतियाँ भी हैं, जिनका सामना बी. एड. और शिक्षा शास्त्री के छात्राध्यापकों को करना पड़ सकता है।

बुनियादी ढांचे की कमी: विद्यालयों में पर्याप्त बुनियादी ढांचे की कमी एक बड़ी चुनौती है, जैसे कि कक्षाओं की कमी, पुस्तकालय और प्रयोगशालाओं की अनुपलब्धता।

शिक्षकों की कमी: प्रशिक्षित और अनुभवी शिक्षकों की कमी एक अन्य बड़ी चुनौती है, जो छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में बाधा उत्पन्न करती है।

भाषा और सांस्कृतिक विविधता: भारत की भाषायी और सांस्कृतिक विविधता एक चुनौती हो सकती है, खासकर जब छात्रों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने की बात आती है।

डिजिटल विभाजन: ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच डिजिटल विभाजन एक अन्य चुनौती है, जो छात्रों को समान अवसर प्रदान करने में बाधा उत्पन्न करती है।

छात्राध्यापकों के अभिमत : बी. एड. और शिक्षा शास्त्री के छात्राध्यापकों के अभिमत का तुलनात्मक अध्ययन करने से पता चलता है कि वे इन चुनौतियों के प्रति सहमत हैं और उनका मानना है कि इन चुनौतियों का सामना करने के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है।

शिक्षकों की भूमिका: अधिकांश छात्राध्यापकों का मानना है कि शिक्षकों की भूमिका छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण है, और उन्हें अपने शिक्षण कौशल में सुधार करने के लिए नियमित प्रशिक्षण और समर्थन की आवश्यकता है।

सरकारी समर्थन: छात्राध्यापकों का मानना है कि सरकारी समर्थन और नीतियों का क्रियान्वयन इन चुनौतियों का सामना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन में कई चुनौतियाँ हैं, जिनका सामना बी. एड. और शिक्षा शास्त्री के छात्राध्यापकों को करना पड़ सकता है। इन चुनौतियों के प्रति छात्राध्यापकों के अभिमत का तुलनात्मक अध्ययन करने से पता चलता है कि वे इन चुनौतियों का सामना करने के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता को समझते हैं और सरकारी समर्थन और शिक्षकों की भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन के लिए आगे की दिशा में निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं:

शिक्षकों को प्रशिक्षण: शिक्षकों को नियमित प्रशिक्षण और समर्थन प्रदान करने से उन्हें अपने शिक्षण कौशल में सुधार करने में मदद मिल सकती है।

सरकारी समर्थन: सरकारी समर्थन और नीतियों का क्रियान्वयन इन चुनौतियों का सामना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

बुनियादी ढांचे का विकास: विद्यालयों में बुनियादी ढांचे का विकास करने से छात्रों को बेहतर शिक्षा प्रदान करने में मदद मिल सकती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक महत्वपूर्ण कदम है, जिसका उद्देश्य भारतीय शिक्षा प्रणाली को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना है। इस नीति के क्रियान्वयन में कई चुनौतियाँ हैं, लेकिन ठोस कदम उठाने से इन चुनौतियों का सामना किया जा सकता है और छात्रों को बेहतर शिक्षा प्रदान की जा सकती है।भारत में शिक्षा को लेकर समय-समय पर नीतिगत बदलाव होते रहे हैं, ताकि बदलते वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देश की युवा पीढ़ी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो सके। इसी क्रम में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) एक ऐतिहासिक कदम है, जिसे भारत सरकार द्वारा जुलाई 2020 में पारित किया गया। यह नीति भारत की शैक्षिक संरचना, पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धति, मूल्यांकन प्रणाली आदि में व्यापक

बदलाव लाने का प्रयास करती है।यह नीति नवाचार, लचीलापन, बहु-विषयकता, समावेशिता और सीखने की समग्रता पर बल देती है। किंतु, किसी भी नीति के क्रियान्वयन में सफलता मात्र उसकी रचना से नहीं होती, बल्कि उस नीति को ज़मीनी स्तर पर लागू करने वाले प्रमुख स्तंभ – *शिक्षक* – की सोच, दृष्टिकोण और सहभागिता पर भी निर्भर करती है।इस लेख में हम *बी.एड. (B.Ed.)* एवं *शिक्षा शास्त्र (Education/M.Ed./Edu. Research)* के छात्राध्यापकों के दृष्टिकोणों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करेंगे, जिससे यह समझा जा सके कि NEP 2020 के क्रियान्वयन में कौन-सी चुनौतियाँ सामने आती हैं, और इन दोनों वर्गों का दृष्टिकोण किस प्रकार भिन्न या समान है।

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रमुख विशेषताएँ

NEP 2020 के मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में इस प्रकार समझा जा सकता है:

- **5+3+3+4 शिक्षा संरचना**: पारंपरिक 10+2 प्रणाली को समाप्त कर, नया वर्गीकरण लाया गया है।
- **मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा**: कक्षा 5 तक शिक्षा मातृभाषा या स्थानीय भाषा में देने का सुझाव।
- **बहुभाषिक शिक्षा पर बल**
- **स्कूल एवं उच्च शिक्षा में लचीलापन**: विषयों को चुनने की स्वतंत्रता।
- **शिक्षकों का प्रशिक्षण एवं मूल्यांकन सुधार**
- **नई तकनीकों का समावेश**: डिजिटल लर्निंग, ऑनलाइन एजुकेशन, वर्चुअल लैब्स आदि।

2. बी.एड. छात्राध्यापकों की दृष्टि से चुनौतियाँ:बी.एड. (बैचलर ऑफ एजुकेशन) के छात्र ऐसे शिक्षार्थी होते हैं जो जल्द ही विद्यालय स्तर पर शिक्षण कार्यभार संभालने वाले होते हैं। उनका दृष्टिकोण अधिक व्यावहारिक और कक्षा-केंद्रित होता है।

प्रमुख चुनौतियाँ उनके अनुसार:

1. **मातृभाषा में शिक्षण की व्यवहारिक कठिनाइयाँ**:भारत की भाषाई विविधता इतनी अधिक है कि एक ही कक्षा में कई भाषाओं के विद्यार्थी होते हैं। बी.एड. छात्र मानते हैं कि मातृभाषा में शिक्षण लागू करना व्यावहारिक रूप से जटिल होगा।
2. **तकनीकी अवसंरचना की कमी**:ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल संसाधनों की कमी, प्रशिक्षित शिक्षक न होना, इंटरनेट की अनुपलब्धता, NEP की डिजिटल सोच को चुनौती देती है।
3. **शिक्षकों पर अतिरिक्त भार**:बी.एड. छात्राध्यापकों का मानना है कि नई मूल्यांकन प्रणालियाँ, पोर्टफोलियो, परियोजना कार्य आदि से शिक्षकों पर प्रशासनिक और मानसिक दबाव बढ़ेगा।
4. **बहु-विषयकता का व्यावहारिक पक्ष**:वे इस बात को लेकर चिंतित हैं कि सभी शिक्षकों को बहु-विषयक होने की उम्मीद से कार्यभार और प्रशिक्षण की ज़रूरतें बढ़ेंगी।

3. शिक्षा शास्त्री (M.Ed./शिक्षाविद) छात्राध्यापकों की दृष्टि से चुनौतियाँ:शिक्षा शास्त्र के विद्यार्थी शिक्षा प्रणाली को एक व्यापक सामाजिक, दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक और नीतिगत परिप्रेक्ष्य से देखते हैं। उनका दृष्टिकोण अधिक सैद्धांतिक एवं नीतिगत होता है।

उनके अनुसार मुख्य चुनौतियाँ:

1. **नीति और क्रियान्वयन में असमानता**:NEP 2020 की भावना प्रशंसनीय है, किंतु शिक्षा शास्त्री मानते हैं कि नीति और ज़मीनी हकीकत में बहुत अंतर है। क्रियान्वयन की स्पष्ट रूपरेखा का अभाव है।
2. **शिक्षक प्रशिक्षण का अभाव**:यदि शिक्षकों को नई नीति के अनुरूप प्रशिक्षित नहीं किया गया, तो NEP की मूल भावना कमजोर पड़ जाएगी।
3. **शहरी और ग्रामीण असमानता**:शिक्षा शास्त्री मानते हैं कि नीति मुख्यतः शहरी संदर्भ में उपयुक्त प्रतीत होती है, जबकि ग्रामीण विद्यालयों की आवश्यकताएँ, सुविधाएँ और चुनौतियाँ भिन्न हैं।
4. **समावेशिता की चुनौती**:NEP में समावेशी शिक्षा की बात की गई है, किंतु विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए आवश्यक संसाधनों की कमी एक बड़ी बाधा है।

4. तुलनात्मक विश्लेषण

बिंदु	बी.एड. छात्राध्यापक	शिक्षा शास्त्री छात्राध्यापक
दृष्टिकोण	व्यावहारिक, कक्षा-आधारित	सैद्धांतिक, नीतिगत
मूल चिंता	क्रियान्वयन में संसाधनों की कमी	नीति व यथार्थ में अंतर
तकनीकी पक्ष	तकनीकी अवसंरचना व उपयोग की चिंता	डिजिटल डिवाइड का मुद्दा
शिक्षक प्रशिक्षण	कार्यभार बढ़ने की आशंका	पुनःप्रशिक्षण की अनिवार्यता
समावेशिता	कक्षा प्रबंधन की कठिनाइयाँ	नीति में विशेष ज़रूरतों की अनदेखी

5. समाधान हेतु सुझाव

दोनों वर्गों के अभिमतों को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं:

- **व्यावहारिक प्रशिक्षण**: B.Ed. व अन्य शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में NEP आधारित मॉड्यूल्स को शामिल करना।
- **डिजिटल अवसंरचना में निवेश**: ग्रामीण व पिछड़े क्षेत्रों में डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
- **सतत शिक्षक विकास कार्यक्रम (Continuous Professional Development)** की स्थापना।
- **नीति के स्थानीय अनुकूलन की स्वतंत्रता** देना, ताकि भिन्न-भिन्न क्षेत्रों की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा दी जा सके।
- **समावेशी शिक्षा के लिए विशेष प्रशिक्षण** और संसाधनों की उपलब्धता।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक दूरदर्शी दस्तावेज़ है, जो भारत को वैश्विक शिक्षा के मानकों तक पहुँचाने की क्षमता रखता है। लेकिन इसके प्रभावी क्रियान्वयन के लिए नीतिगत इच्छाशक्ति, संसाधनों की उपलब्धता, और सबसे महत्त्वपूर्ण – शिक्षकों की सहभागिता अनिवार्य है।बी.एड. और शिक्षा शास्त्र के छात्राध्यापकों के अभिमत इस ओर संकेत करते हैं कि नीति में निहित नवाचारों की सफलता तभी संभव है जब इसे ज़मीनी हकीकत से जोड़ा जाए और

उसे लागू करने वालों को सशक्त किया जाए। इन दोनों वर्गों के विचार हमें यह समझने में मदद करते हैं कि नीति के हर स्तर पर समन्वय और सहयोग आवश्यक है – तभी शिक्षा का वास्तविक रूपांतरण संभव है।

Conslusion : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, जिसका उद्देश्य छात्रों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना है। इस नीति के क्रियान्वयन में कई चुनौतियाँ हैं, जिनका सामना बी. एड. और शिक्षा शास्त्री के छात्राध्यापकों को करना पड़ सकता है। इस अध्ययन में, हमने इन चुनौतियों के प्रति छात्राध्यापकों के अभिमत का तुलनात्मक अध्ययन किया है।इस अध्ययन से पता चलता है कि बी. एड. और शिक्षा शास्त्री के छात्राध्यापक राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन में आने वाली चुनौतियों के प्रति सहमत हैं। वे मानते हैं कि इन चुनौतियों का सामना करने के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है, जैसे कि शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान करना, सरकारी समर्थन और बुनियादी ढांचे का विकास करना। इस अध्ययन से कुछ महत्वपूर्ण बिंदु उभर कर सामने आए हैं: शिक्षकों की भूमिका: छात्राध्यापकों का मानना है कि शिक्षकों की भूमिका छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण है, और उन्हें अपने शिक्षण कौशल में सुधार करने के लिए नियमित प्रशिक्षण और समर्थन की आवश्यकता है।सरकारी समर्थन: छात्राध्यापकों का मानना है कि सरकारी समर्थन और नीतियों का क्रियान्वयन इन चुनौतियों का सामना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। बुनियादी ढांचे का विकास: छात्राध्यापकों का मानना है कि विद्यालयों में बुनियादी ढांचे का विकास करने से छात्रों को बेहतर शिक्षा प्रदान करने में मदद मिल सकती है।राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन के लिए आगे की दिशा में निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं: शिक्षकों को प्रशिक्षण: शिक्षकों को नियमित प्रशिक्षण और समर्थन प्रदान करने से उन्हें अपने शिक्षण कौशल में सुधार करने में मदद मिल सकती है। सरकारी समर्थन: सरकारी समर्थन और नीतियों का क्रियान्वयन इन चुनौतियों का सामना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। बुनियादी ढांचे का विकास: विद्यालयों में बुनियादी ढांचे का विकास करने से छात्रों को बेहतर शिक्षा प्रदान करने में मदद मिल सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक महत्वपूर्ण कदम है, जिसका उद्देश्य भारतीय शिक्षा प्रणाली को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना है। इस नीति के क्रियान्वयन में कई चुनौतियाँ हैं, लेकिन ठोस कदम उठाने से इन चुनौतियों का सामना किया जा सकता है और छात्रों को बेहतर शिक्षा प्रदान की जा सकती है।

References :

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020:
2. मानव संसाधन विकास मंत्रालय:
3. शिक्षा विशेषज्ञों के लेख और ब्लॉग:
4. "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: एक विश्लेषण"
5. "शिक्षा नीति और राष्ट्रीय विकास"
6. "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: चुनौतियां और अवसर"
7. "शिक्षा प्रणाली में सुधार: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020"
8. "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: एक तुलनात्मक अध्ययन"
9. शोध पत्र और लेख
10. शिक्षा से संबंधित वेबसाइटें और पोर्टल